DOI: 10.51220/hjssh.v9i1.11

Himalayan J. Soc.Sci. & Humanities Vol- 9 pp.69 - 72, December, 2014, ISSN. 0975 - 9891

श्रीमद्भागवत में वर्णित कपिलोपाख्यान की दार्शनिकता

द्वारिका प्रसाद नौटियाल
संस्कृत विभाग
हे0न0व0 गढवाल (केन्द्रिय) विश्व विद्यालय परिसर, पौड़ी गढवाल

Received: 22.10.2014 Revised: 23.12.2014 Accepted: 24. 12.2014

ABSTRACT

वर्तमान समय के लिए यह भागवत में वर्णित कपिलोपाख्यान अत्यन्त उपयोगी है, क्योंकि इस व्यस्ततम जीवन को त्रिबिध तापों से निवृत्ति के लिए भगवान कपिल के दार्शनिक सिद्धान्तो का अनुकरण करना नितान्त आवश्यक है। आज का मानव अत्यन्त तनाव ग्रसित होता जा रहा है। भौतिक साधनों का बाहुल्य होते हुए भी अशान्त है। बाह्य आडम्बरों में फंस कर असली सुख शान्ति से दूर होता जा पहा है। इन्ही अनेक प्रकार की उर्मियों की निवृत्ति के लिए कपिलोपाख्यान विशिष्ट उपयोगी है।

KEY WORDS-श्रीमद्भागवत, कपिलोपाख्यान, दार्शनिकता

श्रीमद्भागवत-

कपिलस्तत्त्वसंख्याता भगवानात्ममायया।
जातः स्वयमजः साक्षादात्मप्रज्ञप्त ये नश्णाम्।।

पौराणिक साहित्य को गौरवान्वित करने वाला यह अनुपम पुराण वेदों का परिपक्व फल है। वैश्णवाचार्यों ने प्रस्थानत्रयी के समान भागवत को भी अपना उपजीव्य माना है। बल्लभाचार्य भागवत को महर्षि व्यास की उत्कृष्ट समाधिस्थ भाषा कहतें हैं।[1] भागवत के तृतीय स्कन्ध के अन्तिम आठ अध्यायों में महामुनि कपिल के महानत्तम विचारों को वैज्ञानिक पद्धति में क्रमबद्ध रीति से वर्णित किया गया है। यहीं से सांख्यदर्शन का बीजारोपण होता है। कपिलोपाख्यान में भक्ति योग के साथ बाह्य इन्द्रिय निग्रहण हेतु यम, आंतरिक शुद्धि हेतु नियम, शरीर की शुद्धि के लिए आसन, मन की शुद्धि के लिए प्राणायाम इन्द्रिय निग्रह के साथ मन का नियमन हेतु प्रत्याहार को वैज्ञानिक पद्धति में समझाया गया है। मन बुद्धि की गति शुद्ध करने के लिए धारणा की पद्धति का सांगोपांग वर्णन है। आत्मतत्व की खोज के लिए ध्यान करने की विधि का वर्णन है। जब व्यक्ति की स्थिति सुधारने लगे तब वह ध्यान का उत्तम साधन कैसे करें इस विषय के वर्णन के साथ समाधि का वर्णन है। समाधि का आनन्द ही बह्मानन्द की अनुभूति है। इसमें पंचविंशति तत्वात्मक ज्ञान, जीव सृष्टि का वर्णन अनुपम ढंग से दर्शाया गया है। इस ज्ञान को प्राप्त करके जीव त्रिविध तापों से मुक्त हो जाता है। इसी ज्ञान का माहात्म्य श्रीमद्भगवत गीता में वर्णित है-

इदं ज्ञानमुपाश्रित्य मम साधार्म्यमागताः ।
सर्गेऽपि नोपजायन्ते प्रलये न व्यथन्ति च ॥[2]

भक्तियोग-भगवान कपिल त्रिगुणातीत हैं। वे तो अपनी जनैत्री को उस अक्षय ज्ञान के माध्यम से मुक्ति प्रदान करना चाहते है तथा सम्पूर्ण संसार को सांख्यदर्शन का उपदेश देना चाहते हैं। जिससे सम्पूर्ण मानव जाति सांसारिक ऊर्मियों से ऊपर उठकर परमानन्द का आनन्द प्राप्त कर सकें। श्रीमद् भागवत् महापुराण के तृतीय स्कन्ध में परा भक्ति का उपदेश दिया है। माता देवहूती अपने पुत्र भगवान कपिल की मनो भाव से सेवा कर रही थी उसी समय उन्हें ब्रह्मा जी के वचन याद आये। वे पुत्र भाव का परित्याग कर प्रार्थना करने लगी। मैं तुम्हारी शरण में हूँ तथा तुम शरणांगत रक्षक हो तथा भक्तों के जन्म मरण रूपी वृक्ष को काटने वाले कुल्हाड़े की तरह हो इस लिए मुझे प्रकृति पुरुष के स्वरूप को समझाओ।[3] इन वचनों को सुनकर भगवान कपिल अत्यन्त प्रसन्न हो गये। सांख्यशास्त्र के पुरुष प्रकृति के तत्वात्मक ज्ञान को मातृत्व भाव से ओतप्रोत होकर स्वयं माता देवहूति के दिव्य प्रश्नों का उत्तर देते हुए कहते हैं कि योग तथा आध्यात्मिक ज्ञान परम श्रेय को प्रदान करने वाले तत्व हैं। इसलिए जो योग मैंने पहले ऋषियों को कहा है उसे आपको बताऊंगा। मुक्ति को प्राप्त करने का उत्तम साधन परा भक्ति ही है।[4] भगवत् भक्ति के अतिरिक्त मुक्ति पाने का कल्याणप्रद मार्ग दूसरा नहीं है। विवेकियों ने आसक्ति को ही परम वन्धन का कारण माना है, किन्तु वही आसक्ति यदि सत्संग में हो जाय तो मुक्ति का साधन बन जाती है।[5] कपिल भगवान कहते हैं कि इष्ट में शुद्ध सत्त्व वृत्ति ही भक्ति है। इन्द्रियों की भगवान में शुद्ध निष्काम वृत्ति को ही भक्ति कहते हैं। इसी प्रकार की परा भक्ति मुक्ति से श्रेष्ठ है।[6] इसको प्राप्त करने का प्रथम सोपान श्रद्धा है। आदि गुरू शंकराचार्य विवेक चूड़ामणि नामक ग्रन्थ में श्रद्धा की परिभाषा इस प्रकार से करतें हैं-

शास्त्रस्य गुरूवाक्यस्य सत्य वुद्ध्यवधारणम्।
सा श्रद्धा कथिता: सद्भिर्यया वस्तुपलभ्यते।।[7]

अर्थात् शास्त्रों में और गुरू वाक्य पर सत्य बुद्धि से विश्वास ही श्रद्धा कही जाती है। ईश्वर कृष्ण ने भी सांख्य कारिका मे दु:खत्रय की निवृत्ति के लिए तीन प्रकार के उपायों का वर्णन किया है 1.आधिदैविक 2.आधिभौतिक 3.आध्यात्मिक इनमें आध्यात्मिक उपाय को ही शास्वत माना जाता है।

सांख्ययोग-भक्तियोग का वर्णन करने के अनन्तर सांख्ययोग के प्रकृति पुरुषात्मक ज्ञान का निरूपण है। सांख्य रीति से पदार्थों की उत्पत्ति को समझाते हुए भगवान कपिल कहते हैं कि हे माता! यह विश्व जिस पुरूष से प्रकट होता है वही अनादि आत्मा है। उसकी विभिन्न संज्ञायें हैं। वह स्वयं प्रकाश, चेतनामय, निर्गुण है। वह प्रकृति से परे है।[8] प्रकृति अथवा प्रधान तत्व त्रिगुणात्मक अव्यक्त और कार्य कारणात्मक है। वह विशेष धर्मों से रहित होने पर भी उन धर्मों का आधार है। अनन्तर उन पच्चीस तत्वों के उत्पत्ति का क्रम बताता हूँ -

पंचभि: पंचभिर्बह्म चतुर्भिर्दशभिस्तथा।
एत चतुर्विंशतिकं गणं प्राधनिकं विदु:।।[9]

महत् तत्व की विकृति होने पर सात्विक, राजस, तामस तीन प्रकार की क्रियाशक्ति से अहंकार की उत्पत्ति हुई। इस प्रकार प्रधान से अन्त:करण चतुष्टय के सहित पंचमहाभूत, पंचतन्मात्रायें, पंचज्ञानेन्द्रियां, पंच कर्मेन्द्रियों, की उत्पत्ति होती हैं पचीसवां तत्व स्वयं पुरूष हैं। सात्विक अहंकार के विकार युक्त होने पर मन रूपी तत्व उत्पन्न होता है इसका कार्य संकल्प विकल्प करना है इसी के द्वारा इच्छायें उत्पन्न होती हैं।

वैकारिकाद्विर्कुवाणान्मनस्तत्वमजायत।
यत्संकल्पविलपाभ्यां वर्तते कामसम्भव:।।[10]

मन को अनिरूद्ध भी कहते हैं यह इन्द्रियों का अधिपति यह नीले कमल के समान श्याम वर्ण का है। योगी जन बड़ी कठिनाई से इसे वस में कर पाते हैं। राजस अंहकार के विकृत होने पर बुद्धि तत्व की उत्पत्ति होती है। यह तत्व पदार्थों का ज्ञान कराता है। यह इन्द्रियों का सहायक है। सन्देह मिथ्या ज्ञान, निश्चय, स्मूति, निद्रा, बुद्धि के ही पृथक पृथक कार्य हैं। इसी राजस अंहकार से इन्द्रियां उत्पन्न होती हैं। विकार युक्त तामस अहंकार से आकाश की उत्पत्ति हुई। प्राणियों के प्राण इन्द्रिय मन को आश्रय देना आकाश का कार्य है।[11] आकाश तत्व के विकार युक्त होने से वायु की उत्पत्ति होती है। कार्य गन्ध का वहन करना इसका इन्द्रिय तत्व है घ्राणेन्द्रिय है। वायु तत्व के विकृत होने से अग्नि की उत्पति होती है, उसका रूप चक्षु इन्द्रिय ग्रहण करती है। पदार्थों के आकार का बोध कराना, उसके आश्रित होकर रहना और वस्तुओं के तद्रूप से प्रतीत होना तेज का लक्षण है। प्रकाश देना अन्न पकाना ठण्ड से रक्षा करना भूख प्यास करना तेज का कार्य है।[12] तेज तत्व में विकार उत्पन्न होने से जल तत्व की उत्पत्ति होती है। रस उसका गुण है जिसको रसनेन्द्रिय ग्रहण करती। रस के छ: भेद होते हैं -

कशायो मधुरस्तिक्त: कट्वम्ल इति नैकधा।
भौतिकानां विकारेण रस: एको विभिद्यते।।[13]

जल तत्व के विकृत होने से पृथ्वी तत्व की उत्पत्ति होती है। जिसका गुण गन्ध है और उसे घ्राणेन्द्रिय ग्रहण करती है। इस तत्व का कार्य है-

भावनं ब्रह्मण: स्थानं धारणं सद्विषेशणम्।
सर्व सत्व गुणभेद: पृथिवी वृत्ति लक्षणम्।।[14]

जीव उत्पत्ति का विज्ञान-आगे जीव की उत्पति का वर्णन पूर्ण वैज्ञानिक रीति से किया गया है। भगवान कपिल कहते हैं कि कर्मों का फल ईश्वराधीन हैं। यह जीव पूर्व जन्म में किये हुए कर्मों के अनुसार पुरूष के बीर्य का आश्रय लेकर स्त्री के गर्भ में प्रवेश करता है। एक रात्री में कलल, पांच रात्री में बुलवुले दस दिनों में बदरी फल की तरह परिणत होता है। एक मास में पिण्ड या अण्डाकार (त्रियक योनी) में परिणत हो जाता है।[15] प्रथम मास में शिर द्वितीय मास में हाथपैर तृतीय मास में नाखुन, रोम, हड्डी तथा लिंग भेद, चौथे महीने में सातों धातुयें वन जाती है। पांचवें महीने में भूख प्यास लगनी प्रारम्भ हो जाती। षष्टम् मास में वह जरायु से लिपट जाता है तथा उदर की दाहिनी कोख में घूमने लगता है। सुख दु:ख का अनुभव करता हुआ ईश्वर से प्रार्थना करता हैं।

तस्योपसन्नमवितुं जगदिच्छयात्त नानातनोर्भुवि चलच्चरणारविन्दम्।
सोऽहं व्रजामि शरणं ह्यकुतोभयं मे येनेदृशी गतिरदर्श्यसतोऽनुरूपा।।[16]

भगवान कपिल कहते हैं कि सम्पूर्ण चराचर के नियन्ता इस जीव का आर्त नाद सुनकर उसे गर्भ से बाहर निकालते हैं। उसी भगवान की माया में जीव फंस कर गर्भ से मुक्ति दिलाने वाले ईश्वर को ही भूल जाता है। इस संसार की भूल भूलया में भटक जाता है। इस माया से बचने का सहज उपाय भगवान की परा भक्ति है। इस ज्ञानोपदेश से माता देवहूति के ज्ञान चक्षु खुल गये और परममोक्ष को प्राप्त कर धन्य हो गई।

विषय की उपादेयता

वर्तमान समय के लिए यह भागवत में वर्णित कपिलोपाख्यान अत्यन्त उपयोगी है, क्योंकि इस व्यस्ततम जीवन को त्रिबिध तापों से निवृत्ति के लिए भगवान कपिल के दार्शनिक सिद्धान्तों का अनुकरण करना नितान्त आवश्यक है। आज का मानव अत्यन्त तनाव ग्रसित होता जा रहा है। भौतिक साधनों का बाहुल्य होते हुए भी अशान्त है। बाह्य आडम्बरों में फंस कर असली सुख शान्ति से दूर होता जा पहा है। इन्ही अनेक प्रकार की उर्मियों की निवृत्ति के लिए कपिलोपाख्यान विशिष्ट उपयोगी है। सांख्य शास्त्री इसको मुक्ति का साधन मानतें हैं।

सन्दर्भ सूची

1. द्रष्टव्य पुराण विमर्श (पुराण का अवतरण) पृष्ठ सं0145 आचार्य वलदेव उपाध्याय
2. श्रीमद्भवत गीता अ0 14/2 सं0 विजय नारायण यादव, कला प्रकाज़न वाराणसी 2003
3. श्रीमद्भा0 स्कन्ध 3 अ0 25/11 वेदव्यास गीताप्रेश गौरखपुर प्रकाज़न 51वां सं0 सम्वत् 2061
4. तदैव स्कन्ध 3 अ0 25/13
5. तदैव स्कन्ध 3 अ0 25/19
6. तदैव स्कन्ध 3 अ0 25/20
7. विवेक चुड़ामणी द्रष्टवय पृष्ठ संख्या 3 आदिशकंराचार्य प्रणीत
8. श्रीमद्भा0 स्कन्ध 3 अ0 26/10
9. उपर्युक्त स्कन्ध 3 अ0 26/11
10. उपर्युक्त स्कन्ध 3 अ0 26/27
11. श्रीमद्भा0 स्कन्ध 3 अ0 26/36
12. तदैव स्कन्ध 3 अ0 26/40
13. उपर्युक्त स्कन्ध 3 अ0 26/42
14. श्रीमद्भा0 स्कन्ध 3 अ0 26/46
15. श्रीमद्भा0 स्कन्ध 3 अ0 31/1,2,
16. तदैव स्कन्ध 3 अ0 31/12